<u>नव लोक</u>

सदा रहता जहां केवल धर्म का उद्घोष।

जहाँ जाकर देह इन्द्रिय मन परम निर्दोष।

जहाँ बाधक नहीं भूतल के चिरन्तन द्वन्द्व।

विहारो उस, लोक में अब जननि तुम निर्द्वन्द्व।

अब न होगा उपस्थित छल धर स्वरूप नवीन।

अब नहीं तव नेह सात्विक प्रतिध्वनि से हीन।

अब न भवरुज बन्दिनी हैं विविध मन की साध।

करो विचरण यथा रुचि चिद्व्योम में निर्बाध।

अब न टूटेगी वहाँ पर गहन भाव प्रतीति।

सीखनी होगी न नव संसार की कटु नीति।

अब चलो निज सहज पथ पर सहेजे शुभ रीति।

याद पर रखना स्व सन्तति की अपुष्कल प्रीति ।।

भोपाल शिव कुमार मिश्र

09:02:2024